

## कमलेश्वर की कहानियों का परिचयात्मक अनुशीलन

### सारांश

कमलेश्वर आधुनिक कहानी के प्रमुख हस्ताक्षर हैं। वे एक युगद्रष्टा कहानीकार हैं। इनकी कहानियों में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक और साहित्यिक परिस्थितियों का प्रभाव सहज ही परिलक्षित होता है, क्योंकि कोई भी रचनाकार युगीन परिस्थितियों की उपेक्षा कर साहित्य-सृजन नहीं कर सकता। कमलेश्वर की कहानियों में समाज का व्यापक व संश्लिष्ट चित्रण हुआ है। कमलेश्वर ने आधुनिक परिवेश की कृत्रिमता एवं खोंखलेपन को बेनकाब कर उसे यथार्थ दृष्टि प्रदान की है, आजादी के बाद का परिवर्तित जीवन कमलेश्वर की कहानियों का मुख्य आधार है। जीवन को जैसे-तैसे व्यतीत करने वाला व्यक्ति ही कमलेश्वर की कहानियों का केन्द्रबिन्दु है। आधुनिक जीवन की विसंगतियों के उद्घाटन के साथ आधुनिक युग संदर्भ में मानवीय मूल्यों की खोज इनकी कहानियों की विशेषता है।

**मुख्य शब्द** : संवमित, कुत्सा, अनुस्यूत, नेकर, अतिशयोक्ति, मूल्यवत्ता, शहराती।  
**प्रस्तावना**

कहानीकार के रूप में कमलेश्वर का हिंदी कहानी के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान रहा है। इनकी कहानी-लेखन की यात्रा अन्तिम दौर तक चलती रही है न वह कभी रुके हैं और न ही उनके लेखन में ठहराव आया है। हर दशक में उन्होंने अच्छी रचनायें लिखकर स्वयं को आधुनिकता से जोड़ा है जबकि नये नये कहानी आन्दोलन के बाढ़ में कई प्रस्थापित रचनाकार उखड़ से गए या पूरी तरह से उखड़ ही गए जबकि कमलेश्वर अंत तक कहानी लिखते रहे। इनका कहानी-साहित्य लगातार विकासशील रहा है। इसमें निरंतर परिवर्तन आया है। जैसे-जैसे दृष्टि परिपक्व होती गयी, वैसे-वैसे सृष्टि गंभीर होती गई। नूतन का आकर्षण उन्हें आकर्षित करता रहा। इनकी कहानियाँ हमेशा कुछ नयापन लेकर हमारे समक्ष आती हैं।

### शोध पद्धति

प्रस्तुत शोधपत्र लेखन हेतु विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है।

### शोध-काल

जनवरी-फरवरी 2018।

### अध्ययन का उद्देश्य

कमलेश्वर की कहानियों में विशदता है, विराटता का बोध है, जीवन के विविध पक्षों का संस्पर्श कर यथार्थ अभिव्यक्ति देने का आग्रह है और आधुनिकता के बारीक से बारीक रेशों को परिवर्तित सामाजिक संदर्भों में ही अभिव्यक्त कर उन्होंने समकालीन और सामाजिक दायित्व का निर्वाह करने की सायास कोशिश की है। कमलेश्वर की कहानियों का परिचयात्मक अनुशीलन को समझने के क्रम में इसी उद्देश्य को आलेख में प्रस्तुत किया गया है।

### साहित्यावलोकन

कमलेश्वर का कहानी साहित्य युग का प्रतिबिम्ब है, समाज व समय का दर्पण है। इनकी कहानियों में समाज का जीवन्त चित्रण हुआ है। इन कहानियों में समाज अपने पूर्ण परिवेश के साथ यथार्थ रूप में चित्रितहुआ है। इनके कहानी साहित्य के विविध पहलुओं पर समीक्षकों ने अपने-अपने विचार व्यक्त कर उसे उद्घाटित करने का प्रयास किया है। जिससे आधुनिक परिवेश में जी रहे व्यक्ति की पीड़ा तथा उसका संघर्ष अपने यथार्थ स्वरूप में खुलकर आया है। डॉ. आनंद शर्मा ने अपने ग्रंथ 'उपन्यासकार कमलेश्वर, समाज शास्त्रीय निकष पर' (2002) में लिखा है - "कस्बाई निम्न-मध्यवर्ग-वैषम्य, शोषण और सामाजिक असमानता का चित्रण लेखक ने अपनी प्रगतिशील विचारधारा के आधार पर किया है। परन्तु यह प्रगतिशीलता यशपाल या नागार्जुन जैसी ताजनीतिक सिद्धान्त प्रधान नहीं है। जीवन के संघर्षों से उत्पन्न उनकी यह विचारधारा हर मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी की है।"<sup>8</sup> डॉ. धीरज भाई वणकर ने अपनी पुस्तक



**विजय कुमार चौबे**

अध्यापक,  
हिन्दी विभाग,  
पाण्डेश्वर कॉलेज  
पाण्डेश्वर, बर्दमान,  
पश्चिम बंगाल

‘कमलेश्वर का कहानी साहित्य और सामाजिक यथार्थ’(2010) में अपना विचार व्यक्त किया है कि –“आधुनिक हिंदी कथा-साहित्य में कमलेश्वर का स्थान महत्वपूर्ण है। जीवन की असंगतियों के बीच तालमेल बैठाने वाले कमलेश्वर की कथा-कृतियों में मध्य वर्ग का यथार्थ चित्रण हुआ है सच तो यह है कि कमलेश्वर अपनी कथाओं में युगीन सत्य को उजागर करने में पूर्णतः सफल रहे हैं।”<sup>9</sup> प्रस्तुत आलेख में कमलेश्वर की कहानियों को सामाजिक यथार्थ और उसकी प्रासंगिकता के क्रम में रखकर देखा गया है। यथासंभव संबंधित साहित्य का गुणवत्ता से अध्ययन करने के पश्चात् 2010 के बाद उपरोक्त विषय पर कोई शोधकार्य पुस्तक के रूप में प्राप्त नहीं हुआ है।

### विश्लेषण

कमलेश्वर ने हिंदी कहानी को एक नई परिभाषा प्रदान किया है। उन्होंने मूलतः निम्न मध्यवर्गीय जीवन-मूल्यों को अपनी रचनाशीलता का आधार बनाया है। कहानी की रचना-प्रक्रिया में वे नयी दृष्टि को महत्वपूर्ण मानते हैं। कमलेश्वर आधुनिक मनुष्य के संकट, समस्या, तनाव, घुटन, विसंगति, संत्रास, भय आदि का चित्रण अपनी कहानियों में किया है। दरअसल उन्होंने संकमित, सामाजिक जीवन-संदर्भों की अभिव्यंजना व्यक्तिपरक दृष्टिकोण से किया है। कमलेश्वर की कहानियाँ नये जीवन-मूल्यों को प्रतिष्ठित करती हैं। साथ ही पारम्परिक रूढ़ियों पर प्रहार भी करती हैं।

कमलेश्वर ने हिंदी कहानी को कुंठा और घुटन के सघन कोहरे से निकलकर खुले वातावरण में साँस लेने का अवसर प्रदान किया है। कमलेश्वर के अनुसार –“पश्चिम की कुंठा, कुत्सा, अकेलापन, पराजय और हताशा चिन्ता का विषय हो सकती हैं, वर्ण्य नहीं; क्योंकि हमारा कुंठा, अकेलापन और अस्तित्व का संकट उससे नितान्त भिन्न है – वह टूटते परिवार से उद्भूत है, वह आर्थिक संबंधों के दबाव से अनुस्यूत है – हम अपने सलीब स्वयं ढोने वालों की स्थिति में नहीं हैं, हमारी स्थिति दूसरों द्वारा गाड़े गये सलीबों पर जबर्दस्ती लटकाने दिये गये लोगों की है।”<sup>1</sup>

वर्तमान संदर्भ में कहानी का स्वरूप बदला है। इसलिए उसके मानदंड में भी परिवर्तन की आवश्यकता है। कहानी की सफलता या असफलता की कसौटी यह नहीं हो सकती है कि वह किस हद तक और किसका मनोरंजन करती है, अपितु यह है कि मनुष्य की संवेदनाओं को कहाँ तक झकझोरती, उकसाती और स्पर्श करती है। कमलेश्वर की कहानियों में लोकजीवन की सांस्कृतिक और मधुर संवेदनाओं को वाणी मिली है। ‘देवा की माँ’ ऐसी ही संवेदनाओं से युक्त कहानी है। देवा की माँ के चरित्र के माध्यम से कमलेश्वर ने एक पीढ़ी के नारी-सत्य को बिना किसी लाग-लपेट के सहारे प्रस्तुत किया है।

कमलेश्वर के कहानी साहित्य में यथार्थ पूरे उभार के साथ उद्घाटित होता है। यही कारण है कि कमलेश्वर व्यक्ति, व्यक्ति की परिस्थिति एवं मूल्यगत संकमण को अपने कहानी साहित्य में वाणी देते हैं। यही इनका यथार्थ बोध है। जीवन का यथार्थ – चित्रण करने

के लिए कमलेश्वर की ‘नीली-झील’ कहानी का महेश पाण्डे, ‘अकाल’ के रघुनंदनलाल, ‘कस्बे का आदमी’ का छोटे महाराज, ‘देवा की माँ’ आदि चरित्र साधारण जीवन व्यतीत करते वर्णित हुए हैं। ये सभी चरित्र पुरातन जीवन मूल्यों के प्रति अपवाद स्वरूप हैं और अपनी असहमति व्यक्त करते हैं। इन चरित्रों ने नियमों को बदला है और उन्हें स्वीकार भी किया है। आंचलिक स्तर पर यथार्थवाद की अभिव्यक्ति किस प्रकार की जाती है एवं ग्रामीणों में वैयक्तिक चेतना कितनी उभारी जा सकती है। वह ‘नीली – झील’ कहानी से स्पष्ट हो जाता है।

कमलेश्वर के कहानी में यथार्थ का हृदयग्राही व मार्मिक चित्रण हुआ है। जिसकी झलक ‘अकाल’ कहानी में देखने को मिलती है। प्रस्तुत कहानी में एक क्षुधातुर परिवार का वर्णन हुआ है, उस परिवार में दावत के प्रति लालसा है, जैसे स्वादिष्ट भोजन कभी नसीब नहीं हुआ हो। जब उन्हें बुलावा आता है तब सभी प्रसन्न हो जाते हैं, किन्तु किसी के पास ढंग के कपड़े नहीं हैं, किसी के जूतों में फीते नहीं हैं, किसी के नेकर गंदी है। फिर भी वे सब निकल पड़ते हैं। बातों ही बातों में पैदल ही सफर कट जाता है। सुंदर सिंह के घर में पहुँचकर – “दावत के इंतजार में भोली-भाली आँखें लिए वे खामोश बच्चे जैसे उनका राज खोले दे रहे थे – हम भूखे हैं। हम आज पेट भर खाने के लिए खड़े हैं, हम मिठाई खाएंगे, हम नमकीन खाएंगे, रायता और चाट तरकारी खाएंगे।”<sup>2</sup> भोज प्रारंभ होने पर क्या रघुनंदन लाल या उनके बच्चे कुछ भी खा पाते हैं? रघुनंदन लाल के दाँत कुछ भी चबा नहीं पाते, बच्चों की खाने की गति धीमी होने के कारण रघुनंदन लाल की आदेश भरी आँखें उन्हें खाने की मेज से उठा देती हैं। बिना रिक्शा लिए ही ये सब घिसटते-घिसटते घर पहुँचते हैं और रघुनंदन लाल – “खाट पर लेटते हुए पत्नी को धीरे से पास बुलाकर बोले – ‘सुनो कुछ बचा है?’”<sup>3</sup> यहाँ पर कितना कारुणिक यथार्थ का चित्रण हुआ है, निर्धनता कितना बड़ा अभिशाप है – इसका प्रमाण आँखों के सामने चित्रवत् उपस्थित होते चारों बच्चे दे देते हैं। इस प्रकार कमलेश्वर की कहानियों में यथार्थ अपने पूरे रूप में उभरा है। इनका यथार्थ चित्रण कहीं भी इतना कटु एवं रिक्त नहीं है, जो खटकने लगे, ऐसा चित्रण है जो पढ़ते समय प्रतीत होता है कि सामने ही घटित हो रहा है, इसमें अतिशयोक्ति कहीं भी नहीं पायी जाती।

कमलेश्वर की ‘राजा निरबंसिया’ एक बेजोड़ कहानी है, जहाँ नैतिक मर्यादाएँ परिवर्तित होकर युग सापेक्ष हो गयी हैं। उसमें वैयक्तिक चेतना के साथ – साथ वर्ग-वैषम्य बहुत ही भव्यता के साथ ध्वनित हुआ है। दो कथाएँ एक साथ चलती हैं— एक तो पौराणिक लोककथा, राजा-रानी की और दूसरी रचनाकार की कल्पना, निम्न मध्यवर्गीय जगपति तथा चंदा की। राजा-रानी की कथा में वैयक्तिक चेतना का कोई विशेष उभार नहीं है, फिर भी रानी के माध्यम से इतना तो है ही स्त्री – पुरुष से ऊपर उठने की कोशिश करती है और उठ भी जाती है। राजा-रानी की कथा तो एक संकेत भर है। असल कहानी तो है चंदा और जगपति की। सामंती पौराणिक संस्कृति के राजा – रानी और वर्तमान आर्थिक

विषमताओं से तंग जगपति एवं चंदा जैसे अभिशाप्त स्त्री-पुरुष को पारस्परिक विरोध में रखकर कमलेश्वर ने यह उद्घाटित करने की कोशिश किया है कि यदि संपत्ति हो, चरित्र हो या न हो, नैतिकता हो या न हो, तो भी मनुष्य समाज में पूजा जा सकता है, जैसे राजा-रानी समाज में सम्मान योग्य माने जाते हैं, सम्पत्ति उनके सभी कृत्यों पर पर्दा डाल देती है। जगपति और चंदा की कथा के माध्यम से कमलेश्वर ने निर्धन वर्ग के मन की टोह ली है और अर्थ-परक वैयक्तिक चेतना को वाणी दी है।

'खोई हुई दिशाएँ' से कमलेश्वर की एक नयी यात्रा आरम्भ होती है। वे कस्बाई जीवन से बाहर निकलते हैं। 'राजा निरबंसिया' और 'कस्बे का आदमी' की कहानियों में सामाजिक असंगतियों, विडम्बनाओं, विद्रूपताओं और अमानवीयता के बावजूद एक कोमलता है, जीवन की सहजता और मूल्यवत्ता की तलाश की टीस है। 'देवा की माँ', 'पानी की तस्वीर', 'सुबह का सपना', 'मुर्दा की दुनियाँ', 'तीन दिन पहले की रात', 'कस्बे का आदमी' आदि कहानियों में एक मूल्य है; एक आदर्श की अभिव्यक्ति है और यह स्थिति सन् 60 के आस-पास की रचनाओं में परिलक्षित होती है। 'खोई हुई दिशाएँ' कहानी शहराती बोध, अजनबीपन पर लिखी गई कहानी है। कस्बे से बाहर निकला चंदर शहर में आकर अपने को अकेला और अजनबी महसूस करता है। वह कस्बाई जीवन का सामाजिक संस्कार लेकर महानगर में भटकता है, लोगों से आत्मीय संबंधों की अपेक्षा करता है, लेकिन यहाँ अजनबीपन लगातार डंक मारता रहता है। हाँ, यहाँ पहचान के बिना एक व्यवसायिक पहचान व्याप्त है। समाज अजनबी है, शासन अजनबी है, पड़ोसी अजनबी है किन्तु विडम्बना यह है कि चंदर के अकेलेपन में सभी अपने-अपने ढंग से दखल देते हैं। अजनबीपन शहर के अकेलेपन और परायेपन की ऊब का सार्वजनिक चित्रण न होकर व्यक्तिगत प्रतिक्रियाएँ अधिक है। सिर्फ एक कहानी 'एक रुकी हुई जिन्दगी' कुछ प्रभावित करती है। यह कहानी घड़ी के पेंडुलम सी हिलती जिन्दगी की बड़ी सटीक व्यंजना है। कहानी के पात्रों के जीवन चार वर्ष में ही बदल जाते हैं। चार वर्ष सतवती को गुजरे हुए और तभी से कमरे की दीवार पर घड़ी बस उसी सवा आठ पर रुकी हुई है। कई दिन गुजर गए फिर भी - "मैंने सोचा था कि शायद दीवार पर लटकी हुई घड़ी आज चल रही होगी पर वह उसी तरह रुकी हुई थी, उसमें सवा आठ बज रहे थे।" यह ठहरी हुई जिन्दगी 'तलाश' में भी है, वहाँ सुमी की कैलेन्डर की तारीख बदलने का होश ही नहीं रहता है। कहानीकार के शिल्प की एक बड़ी सीमा तक प्रयोज्य है, जहाँ अपने को दोहराने से नहीं बचा सका है। 'तलाश' में ऐसे सिद्धान्तों का प्रतिफलन है ममी और सुमी ऐसे ही मन:स्थितियों में जी रही है जहाँ अस्तित्व होते हुए भी व्यक्ति अनस्तित्व अनुभव करने को विवश हो जाता है, तभी तो ममी हँसते-हँसते बोली थी - जब से तू गई तारीख ही नहीं बदली। ख्याल ही नहीं रहा और सुमी चाहते हुए भी कुछ कह नहीं पा रही थी उसे लग रहा था कि चलने से पहले वह ज्यादा से ज्यादा पूँछ पाएगी तो यही कि अभी कितना बज गया है?

'माँस का दरिया' में कमलेश्वर पुनः सामाजिक संबंधों की आपसी टकराहट से उत्पन्न संवेदनात्मक गहराई एवं नवीन दृष्टि के समन्वयात्मक सौन्दर्य की ओर मुड़ते हैं। 'माँस का दरिया' वेश्या-जीवन से संबद्ध कहानी है जो कथ्य की निर्बाध स्पष्टता और भाषा के खुलेपन के कारण विवाद का विषय रही है। एक जमाने की संगीत, नृत्य और मधुर संभाषण के लिए प्रसिद्ध वेश्या को वर्तमान समय में केवल 'माँस का दरिया' बना दिया गया है। वेश्या के पास देने के लिए माँस के अलावा होता भी क्या है? प्रस्तुत कहानी की नायिका जुगनू के संबंध में कमलेश्वर लिखते हैं - "कोई-कोई रात तो खाली ही चली जाती थी। और अपनी कोठरी में अकेले लेटे हुए वह बहुत घबराती थी।..... यह पहाड़ सी जिन्दगी ..... दिन-दिन टूटता हुआ शरीर।"<sup>5</sup> लेखक आवेश उपदेश या दया का आँचल ओढ़ने का नहीं, उसके यथार्थ रूप को परखने एवं प्रस्तुत करने का पक्षधर है। वातावरण-अंकन के सहारे पात्रों के दर्द को वह अधिक पैना कर पाया है। अंगारे की तरह जलती यह कहानी नारी की परवशता और छटपटाहट के कारण अधिक कलात्मक बन पायी है।

'बयान' एक सशक्त कहानी है जो न्याय व्यवस्था के खोखलेपन को बेनकाब करती है व्यक्ति की मौत का कारण है क्रूर व्यवस्था, परन्तु न्याय व्यवस्था क्रूर व्यवस्था पर प्रहार करने के बदले उस व्यक्ति की मौत का रहस्य तलाशती है उस मृतक व्यक्ति के पारिवारिक संबंधों के बीच। यह कहानी अदालत में दिए गए बयान के रूप में आत्म कथात्मक शैली में लिखी गई है। घटनाएँ चित्रपटी की तरह इतने वेग से बहती हैं कि कहानी का सौन्दर्य कहीं क्षुण्ण नहीं होने पाता, न उसकी रोचकता कहीं टूटती है।

'नीली झील' सहज मानव-संवेदना को साकार करने वाली वातावरण प्रधान कहानी है। स्वच्छंद अल्हड़ प्रकृति के और रूप लावण्य के पीछे ललचाई नजर से निरर्थक दौड़ लगाने वाले और उम्र के दस साल बड़ी विधवा पत्नी से उखड़े-उखड़े रहने वाले अनपढ़ देहाती महेसा की जीवन-धारा को प्रसूता पत्नी पारवती की मौत ने बदल दिया। पत्नी के अंतिम समय 'मंदिर और धरमशाला' के निर्माण के लिए बचनबद्ध महेसा को झील का आकर्षण कुछ दिनों के लिए उदासीन अवश्य बना पाया, पर अन्ततोगत्वा शिकारी की गोली से मृत सारसनी के पीछे सारस के दृश्य-द्रावक क्रंदन में अपनी विलाप-ध्वनि पाने वाला महेसा, नीलाम में मंदिर के लिए जमीन के बदले किसी अज्ञात प्रेरणा से दलदल वाली नीली झील ही खरीद लेता है। झील पर लगाई गई - 'यहाँ शिकार करना मना है -महेसा पांडे, नीली झील का मालिक' तख्ती में काल के क्रूर हाथों असमय छीन ली गई पत्नी के विछोह की वेदना साकार होती है। सारस का जोड़ा जैसे जीवन के लिए रूपक बन गया है। कार्तिक अगहन में आने वाले पंछियों की आस उसे मृतपत्नी संतर्पण की सात्वना पहुँचाती है। कस्बाई परिवेश का अंकन करनेवाली इस कहानी के संवाद आंचलिकता लिए हुए हैं। महेसा की मन:स्थिति को कहानीकार चित्रण और प्रतीकों के सहारे उभारा है। यौनभाव की परतों को कमलेश्वर ने बड़े ही सहज लहजे में उकेरा है।

‘देवा की माँ’ में परित्यक्ता नारी के मानसिक द्वंद्वों का चित्रण किया गया है। माँ का दरी बुनकर, अपना और पुत्र का पेट पालना और किसी तरह दिन काटना ग्रामीण परिवेश की कठोरता को परिभाषित करता है। प्रस्तुत कहानी में देवा के मन न लगने की चर्चा की गई है। परित्यक्ता नारी दाम्पत्य-निर्वाह की छटपटाहट, गुजारे की स्वनिर्भरता, दूसरी पत्नी के साथ रहने वाले पति के प्रेम की पुनः प्राप्ति की आशा, पति का छलिया रूप प्रकट होने पर उसके प्रति घृणामूलक प्रतिक्रिया इसके बावजूद भी उसकी बीमारी में उसके क्षेमकुशल की प्रार्थना, प्रवंचक पति के मन में छिपी सौभाग्यरक्षा का प्रकटीकरण, पुत्र-वात्सल्य देवा के जेल जाने पर पास-पड़ोसी एवं संबंधियों का विपन्न नारी से आँखें चुराने का जनमानस आदि का सजीव वर्णन है। देवा की माँ में एक ओर सौभाग्य के प्रति निष्ठा है तो दूसरी ओर पति के प्रति अटल विरक्ति भी। देवा कहता है –“हमलोग चलकर बाबूजी को आज ही देख आये। माँ स्पष्ट मना करती है तुम नहीं जाओगे? देवा ने जैसे बात समझाने के लिए बात दोहरायी। नहीं? माँ के स्वर में हठता थी। तो मैं चला जाऊँ? देवा सहसा कह गया। नहीं? माँ ने उसी दृढ़ता से कहा और अपने काम में लग गई।”<sup>6</sup>

आधुनिक युग में मानव अपना यथार्थ स्वरूप प्रस्तुत नहीं करता फलतः रचनाकार उसे हमारे समक्ष वास्तविक रूप में उजागर करता है। ‘दिल्ली में एक मौत’ कहानी में कमलेश्वर ने यह स्पष्ट किया है कि व्यक्ति की मौत भी मात्र दिखाने की वस्तु बन गई है। लोकप्रिय बिजनेस मैगनेट सेठ दीवान चन्द की मौत का असर दिल्ली की रोजमर्रा की जिन्दगी पर नहीं हुआ। दिल्ली की जिन्दगी की हलचल के बीच में सेठ दीवानचन्द की अर्थी निकल रही है। शव के साथ श्मशान यात्रा के लिए कुल सात आदमी बाकी श्मशान भूमि में स्कूटर, कार एवं टैक्सियों की भीड़। यहाँ दिल्ली महानगर की भागदौड़ भरी बनावटी जिन्दगी का संकेत किया है जो आधुनिक जीवन के खोंखलेपन को भी खोलते हैं। कहानी में यह सपष्ट बताया गया है कि व्यक्ति के मरते ही कितना फर्क पड़ जाता है। पिछले साल ही सेठ ने जब लड़की की शादी की थी तो हजारों की भीड़ थी। जिन्दगी एवं मौत का यह अन्तर है। स्वार्थ भरे महानगरीय जीवन में मानवीय रिश्ते खोंखले, दिखावे से भरे कृत्रिम व बेमानी होकर रह गये हैं तथा सम्बन्धों में शुष्कता आ गई है।

कमलेश्वर के पात्र संवेदना के पात्र हैं। लेखक समाज के साथ जुड़कर सभी प्रकार के व्यक्तियों के मन की थाह लेता है और इसी थाह को ही कहानी की अनिवार्यता घोषित करता है। कमलेश्वर की कहानियों में नारी पात्र अपनी पूर्ण गरिमा, वास्तविकता एवं आत्म-सम्मान की भावना के साथ उपस्थित हुए हैं। कमलेश्वर ने नारी का बहुपक्षीय चित्रण किया है। नारी को सम्पूर्णता में चित्रित करना मुख्य विषय है। पतिताओं का उद्धार, अशिक्षिताओं की शिक्षा और आधुनिक परिप्रेक्ष्य में ढलना, जीवन की जटिलताओं, विडम्बनाओं आदि का चित्रण इनकी कहानियों में सहजता से मिल जाता है। ‘माँस का दरिया’ की जुगनू की कहानी उनकी ही नहीं

समग्र वेश्या वर्ग की कहानी है जिसे किसी भी स्थिति में शरीर का सौदा करना पड़ता है।

कमलेश्वर एक ऐसे कथाकार हैं, जो परम्परा से कटे नहीं, बल्कि पुरानी परम्परा के गुणों को अपनी शैली में परोसकर नयी वस्तु उपस्थित करते हैं। आरम्भिक कहानियों में तो परम्परा से पूर्णरूपेण जुड़े हुए हैं। इन कहानियों की शैली लगभग वही रही है, जो प्रेमचंद कालीन लेखकों की थीं कमलेश्वर की कुछ कहानियाँ ‘देवा की माँ’, ‘इन्सान और हैवान’, ‘मुर्दों की दुनिया’, ‘पानी की तस्वीर’, ‘नौकरी-पेशा’ किस्सागोई शैली में लिखी है। ऐसी कहानियों में एक के बाद एक घटनाएँ घटती जाती हैं। वहीं कहीं कमलेश्वर एक गम्भीर दार्शनिक की-सी शैली में कहानी लिखते हैं। इनकी कहानियों में शैली वैविध्य देखने को मिलता है। ‘माँ का दरिया’ की शैली सहज है तो ‘नीली-झील’ और ‘जो लिखा नहीं जाता’ की काव्यात्मक है, तो ‘पराया शहर’ तथा ‘कुछ नहीं कोई नई’ की शैली स्मृत्यात्मक है, ‘कस्बे का आदमी’ की रेखा चित्रात्मक है। कमलेश्वर लोक कथा कहने के मोह से छूट नहीं पाए हैं, फलस्वरूप ‘राजा निरबंसिया’ लोक कथात्मक शैली के आधार पर लिखी गई है। वे ऐसे कहानीकार हैं, जो पुरानी तथा नयी पीढ़ी दोनों से जुड़े परिलक्षित होते हैं। इनकी कहानियों की विशेषता को रेखांकित करते हुए धनंजय वर्मा लिखते हैं – “इस लिहाज से हिंदी कहानी की परम्परा को इन्होंने आत्मसात किया और उसे अलग-अलग भोगा है। उनकी सारी कहानियाँ कथ्य और शिल्प के स्तर पर ही नहीं, भावबोध और चेतना के स्तर पर भी एक क्रमिक और अनुवर्ती संक्रमण की द्योतक हैं। लेकिन इनके पीछे रचना संकेतना की वह प्रकृति है, जो निरन्तर अपने वृत्त छोड़ती और सीमाएँ बढ़ाती है।”<sup>7</sup>

### निष्कर्ष

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि कमलेश्वर ऐसे कहानीकार हैं, जो पुरानी तथा नयी पीढ़ी दोनों से जुड़े दिखाई पड़ते हैं। विशिष्टता यह है कि सामाजिक चेतना की प्रस्तुति की प्रक्रिया भी वैयक्तिक धरातल पर टिकी है। लेखक ने मनुष्य का मनुष्य के प्रति कपटपूर्ण व्यवहार, निर्धनता का नग्नरूप, स्त्री-पुरुष संबंध, बेकारी की समस्या, वेश्यावृत्ति, सामाजिक कुरीतियाँ, असंतोष और विद्रोह की भावना तथा पारिवारिक जीवन की विविध रूपों और संबंधों आदि विषयों को अपने वैयक्तिक अनुभवों व जीवन दृष्टि के आधार पर सशक्त वाणी प्रदान की है। वर्तमान संदर्भों में कमलेश्वर की कहानियाँ आधुनिक परिवेश के सूक्ष्मतरंग यथार्थ के प्रसंगों से जोड़ती हैं। जितना वैविध्यपूर्ण मानव संसार है उतना ही वैविध्यपूर्ण कमलेश्वर का रचना संसार है।

### संदर्भ ग्रंथ सूची

1. सत्स्रोत्र हिन्दी कहानियों में बदलते मानवीय संबंध, अजिता के. नायर – जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, सं.-2001, पृ.-73
2. बयान तथा अन्य कहानियाँ – लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र. सं. – 1972, पृ. 69
3. बयान तथा अन्य कहानियाँ – लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र. सं. – 1972, पृ.-78

4. समग्र कहानियाँ, कमलेश्वर – राजपाल एण्ड सन्स, प्र.स. – 2001, पृ. 309
5. समग्र कहानियाँ, कमलेश्वर – राजपाल एण्ड सन्स, प्र.स. – 2001, पृ-345
6. समग्र कहानियाँ, कमलेश्वर – राजपाल एण्ड सन्स, प्र.स. – 2001, पृ-162
7. नई कहानी में वैयक्तिक चेतना, डॉ. कु. प्रेमपाल, मुद्रक चाननाप्रेस 13, एम.एम. रोड, दिल्ली, (1980) पृ.- 93
8. उपन्यासकार कमलेश्वर समाज शास्त्रीय निकष पर, डॉ. आनंद शर्मा – मेधा बुक्स, एक्स-11, नवीन शाहदरा, दिल्ली, प्र. सं.-2002, पृ.-52
9. कमलेश्वर का कहानी साहित्य और सामाजिक यथार्थ, डॉ. धीरज भाई वणकर – ज्ञान प्रकाशन, 128/90 'G' ब्लॉक, किदवई नगर, कानपुर 208011, प्र. सं.-2010, पृ.-24-25